2 दिसम्बर 2017, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के
व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 40, अंक : 17 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
दिसम्बर (प्रथम), 2017 (वीर नि. संवत्-2544) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

झालरापाटन-झालावाड़ (राज.) : यहाँ पिपली बाजार स्थित एस.टी.सी. ग्राउण्ड में आयोजित श्री 1008 नेमीनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव मंगलवार, दि. 14 नवम्बर से रविवार 19 नवम्बर 2017 तक अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** द्वारा प्रतिदिन पंचकल्याणक विषय पर हुए मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। आपके अतिरिक्त ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित नीलेशभाई शाह मुम्बई, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित ज्ञानचंदजी झालावाड़, पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा, पण्डित गुलाबचंदजी बीना इत्यादि अनेक विद्वानों के प्रवचन व सान्निध्य प्राप्त हुआ।

पञ्चकल्याणक की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा-विधि प्रतिष्ठाचार्य ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली द्वारा श्री रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर के निर्देशन में पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित नगेशजी पिड़ावा, पण्डित रतनजी शास्त्री कोटा, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, ब्र.श्रेणिकजी जबलपुर, श्री मनोजजी जबलपुर, श्री चिदानन्दजी सोनगढ, श्री दिव्यांशजी जैन अलवर एवं स्थानीय विद्वान आदि अनेक महानुभावों के सहयोग से शुद्ध तेरापंथ आम्नायानुसार

(शेष पृष्ठ 5 पर ...)

विशेष आमंत्रण

ललितपुर (उ.प्र.) में **श्री 1008 महावीर दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव** दिनांक 12 फरवरी से 16 फरवरी, 2018 तक पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के निर्देशन में संपन्न होने जा रहा है।

इस पंचकल्याणक में तत्त्ववेत्ता **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** आदि अनेक विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त होगा। सभी साधर्मीजन सपरिवार इष्ट-मित्रों सहित पधारकर अवश्य लाभ लें।

अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल का -

85वाँ जन्मदिवस सानन्द संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 21 नवम्बर को श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के यशस्वी प्राचार्य, लोकप्रिय लेखक, आचार्य अमृतचन्द्र पुरस्कार से पुरस्कृत, सरल स्वभावी पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल का 85वाँ जन्मदिवस मनाया गया।

इस अवसर पर प्रात: सामूहिक जिनेन्द्र-पूजन का विशेष आयोजन किया गया। सायंकालीन सभा के अन्तर्गत सर्वप्रथम निवास स्थान से प्रवचन हॉल तक विद्यार्थियों ने पंक्तिबद्ध होकर पण्डित रतनचंदजी-श्रीमती कमला भारिल्ल एवं डॉ. हुकमचंदजी-श्रीमती गुणमाला भारिल्ल का स्वागत व अभिनन्दन किया। प्रवचन हॉल को पण्डित रतनचंदजी के साहित्य व विचारों के बैनरों से सजाया गया। सभा के दौरान विद्यार्थियों ने पण्डितजी की 29 रचनाओं का परिचय दिया एवं अध्ययन करने हेतु प्रेरित किया। इस अवसर पर देश-विदेश के 50 से अधिक श्रेष्ठियों एवं विद्वानों के द्वारा भेजे गये शुभकामना सन्देशों को प्रोजेक्टर के माध्यम से दिखाया गया।

कार्यक्रम में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य', डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, श्री प्रकाशचंदजी सेठी, श्रीमती कमला भारिल्ल आदि महानुभावों ने अपने विचार व्यक्त किये। इसके अतिरिक्त महाविद्यालय के छात्र प्रतिनिधि के

(शेष पृष्ठ 7 पर ...)

सम्पादकीय –

मेरी जीवन यात्रा के कुछ प्रेरक प्रसंग

3

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

मैंने उनसे पूछा-''यह सब आपसे किसने कहा?'' वे बोले-''आपको इससे क्या मतलब! अब वह यहीं रहेगी और जैसा हमने उसे छाती पर रखकर पालापोषा है, वैसे ही जीवनभर छाती पर रखेंगे।''

मेरी पत्नी ने यह सब संवाद सुना तो उससे नहीं रहा गया और नि:संकोच होकर वह अपने पिता से बोली-''आप यह क्या कह रहे हो? आपकी भावना गलत नहीं है, सभी अपनी संतान को सुखी देखना चाहते हैं; परन्तु आप मुझे यह बताइये कि जब आपकी छाती नहीं रहेगी तब मेरा क्या होगा? क्या मैंने आपसे कभी वहाँ के सुख-दु:ख के बारे में कुछ कहा है? तुम ऐरे-गैरों की बातों में आकर जो कह रहे हो, वह ठीक नहीं है। उनकी भी अपनी कुछ मजबूरियाँ हैं। यदि राजी-खुशी से कुछ दिनों को छोड़ते हैं तो ठीक है, अन्यथा भेजने की तैयारी कर दो।''

उसके मुँह से ऐसी समझदारी की बातें सुनकर वे आश्चर्यचकित हो गये। मन ही मन प्रसन्न हुये और बोले-''इस अबोध लड़की में इस छोटी सी उम्र में ऐसी समझदारी कहाँ से आ गई?'' वे तुरन्त भेजने को तैयार हो गये। वातावरण एकदम खुशी में बदल गया।

मैं बीमार माँ और वृद्ध पिता की सेवा तथा ग्रामीण घरेलू भारी-भरकम कामकाज के बोझ की जिम्मेदारी नव विवाहिता 14 वर्षीय पत्नी पर छोड़कर शेष पढाई पूरी करने पुन: चला गया।

जो कल तक अपनी नींद सोती थी और अपनी नींद उठती थी, दिनभर सखी-सहेलियों के साथ मौज-मस्ती से हंसती-खेलती थी, उसे आज वह सब करना पड़ा जो उसने जीवन में कभी नहीं किया था, तो परेशानी तो होनी ही थी; परन्तु उसने फिर भी कभी किसी से कुछ नहीं कहा। चुपचाप रहकर उसने वे दिन सास-श्वसुर की सेवा में गुजारे। इस सबमें उसने जो श्रम किया वह अनिर्वचनीय है।

जयपुर आगमन – आदरणीय बाबूभाई और श्री नेमीचन्दजी पाटनी के अनुरोध, भाई हुकमचंद के सत्परामर्श तथा श्री पूरणचंदजी गोदिका की हार्दिक भावना का सम्मान करते हुए मैं सन् 1979 अगस्त में विदिशा से जयपुर आ गया था। मेरे जयपुर आने का निर्णय सुनकर मेरी पत्नी को तत्काल थोड़ी परेशानी महसूस हुई, क्योंकि वह प्रथम तो अत्यधिक परिश्रम से प्राप्त शासकीय सेवा छोड़ना नहीं चाहती थी, दूसरे वहाँ के महिला मण्डल से विशेष लगाव था; परन्तु जब मैंने जयपुर जाने के लाभों से अवगत कराया तो वह उन बातों को समझी हो या न समझी हो, पर इतना तो समझ ही गई कि मेरी जयपुर जाने की तीव्र इच्छा है। बस, इतना समझते ही उसने जयपुर आने का मानस बना लिया। उसके जयपुर आने के निर्णय से विदिशा महिला मण्डल दु:खी हुआ; पर अन्त में हमारे उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए और जयपुर में हमारी आवश्यकता एवं अधिक उपयोगिता मानकर हमें विदिशा समाज ने सहर्ष विदाई दे दी।

आध्यात्मिक उन्नति की दृष्टि से जयपुर को मैं अपने जीवन का स्वर्ण युग कह सकता हूँ। जो आत्मोन्नति का एवं पारिवारिक प्रगति का काम जयपुर में हो गया, वह विदिशा में संभव नहीं था। आत्महित और जनहित - दोनों दृष्टियों से मेरी सामर्थ्य का और शक्ति का सर्वाधिक सदुपयोग जयपुर में हुआ है।

यद्यपि यह सच है कि उपादान के बिना अकेला निमित्त अकिंचित्कर है; पर उपादान के साथ जिन-जिन प्रेरक निमित्तों की कार्य के सम्पन्न होने में आवश्यकता होती है, वे सब निमित्त यहाँ सहज उपलब्ध थे। जो भी साहित्यिक काम मेरे निमित्त से हुआ, वह सब जयपुर में ही हुआ है। मेरे साहित्यिक काम से सम्पूर्ण मुमुक्षु समाज तो सुपरिचित है ही, अन्य जैन-जैनेत्तर समाज ने भी लाभ उठाया है इसका मुझे हर्ष है।

पता नहीं मेरे अकलौते पुत्र चि. शुद्धात्म को उसकी शादी के पूर्व 19-20 की उम्र में कहाँ से/कैसे प्रेरणा मिली? उसके मन में क्यों ऐसा विकल्प आया कि ''बड़े दादा को मौलिक पुस्तकें भी लिखना चाहिये। वे मौलिक पुस्तकें क्यों नहीं लिखते?''

एक दिन वह बोला-''दादा ! आप घर के जिन छोटे-मोटे कामों में उलझे रहते हो, उन्हें बिलकुल बंद कर दो, जिन कामों को कोई दूसरा कर सकता है, उसे आप बिलकुल नहीं करें। उसके बदले में आप भी कोई मौलिक कृति लिखो। वह अपनी मम्मी से भी लड़ा।'' उसने कहा- मम्मी! आप दादा को घर के किसी काम में नहीं उलझायें। उसकी मम्मी ने स्पष्टीकरण दिया- दादा ने जयपुर आकर बाजार का तो कोई काम कभी किया ही नहीं, पानी का गिलास भी कभी भरकर नहीं पिया और उन्हें

खाना खाकर अपनी थाली उठाने की तो आदत ही नहीं है। हाँ, कुछ ऐसे काम होते हैं, जिन्हें हम कर नहीं सकते, वे यदाकदा कर देते हैं, भविष्य में मैं उनके लिये भी नहीं कहूँगी।

उन माँ-बेटे से प्रेरणा पाकर मैंने सबसे पहले उपन्यास के रूप में संस्कार लिखना प्रारम्भ किया। जब मैंने लिखना प्रारम्भ किया तब मुझे मालूम नहीं था कि यह कृति इतनी लोकप्रिय बन जायेगी; पर जो कार्य होना होता है, तदनुकूल पाँचों समवाय सहज मिलते जाते हैं, सो मिलते चले गये और पाँच हजार का प्रथम संस्करण हाथोंहाथ बिक गया।

बिक्री केन्द्र में आते ही उसके एक के बाद एक - अनेक संस्करणों के प्रकाशन का तांता लग गया। फिर क्या था! मेरा उत्साह बढता गया, आत्मविश्वास भी बढ गया। दूसरी कृति विदाई की बेला उससे भी अधिक पसन्द की गई। उसी क्रम में फिर इन भावों का फल क्या होगा? और सुखी जीवन जैसी कृतियों को भी पाठकों ने वैसा ही पसन्द किया। हरिवंश कथा और शलाका पुरुष भी सराही जा रही है, पढी जा रही है।

यदि मेरा पुत्र चि. शुद्धात्मप्रकाश मुझे उस दिन प्रेरित नहीं करता, तो हो सकता है यह सिलसिला प्रारम्भ नहीं होता और मैं जैसे-जैसे लिखता गया, उसे भाई हुकमचंद को पढाता भी गया। यद्यपि वे स्वयं के लेखन में इतने व्यस्त रहते हैं कि अन्य किसी के भी लिखे लेखादि को पढने का उनके पास समय ही नहीं होता; फिर भी उन्होंने मेरा लिखा आद्योपांत पूरा पढा और परामर्श देते हुए, अनुमोदना करके प्रोत्साहित भी किया, यदि यह सब अनुकूलता न होती तो जैसे जीवन के 48 वर्ष बिना कुछ लिखे निकल गये थे, शेष जीवन भी निकल जाता।

इस अवसर पर मैं अपने अनुज डॉ. हुकमचंद भारिल्ल के सम्बन्ध में क्या-क्या लिखूँ, किन-किन बातों का उल्लेख करूँ? हम दोनों भाई बचपन से ही दो देहों में एक आत्मा जैसे रहे हैं। मेरे सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में जो सत्परामर्श, सही सलाह और सहयोग रहा, वह वचनातीत है। ऐसे पारिवारिक और धार्मिक अनूकूल संयोगों का मिलना किसी विशेष पुण्य का ही सुफल है - ऐसा मेरा विश्वास है।

इस प्रसंग पर मुझे भी कुछ न कुछ अपने सम्बन्ध में लिखना तो था ही, अत: जो बातें मेरे सिवाय और कोई नहीं जानता था, वह लिखने का भाव बन गया। मेरे इस बहत्तर वर्षीय जीवन के उत्तरोत्तर बढते हुये ग्राफ से और उसमें हुये संघर्षों तथा संकल्पों की जानकारी से संभव है पाठक कुछ प्रेरणा प्राप्त करें, मात्र इस भावना से लिखने का भाव बना है, अन्य कुछ प्रयोजन नहीं है। इति शुभ। ●

पंचम वार्षिक महोत्सव संपन्न

सम्मेदशिखरजी (झारखण्ड) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान नगर में श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई के तत्त्वावधान में पार्श्वनाथ पंचकल्याणक महोत्सव का पंचम वार्षिक महोत्सव दिनांक 22 से 26 नवम्बर तक मनाया गया।

इस अवसर पर आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, पण्डित राजेन्द्रजी जैन जबलपुर, पण्डित रजनीभाई हिम्मतनगर, पण्डित महेशचंदजी ग्वालियर आदि के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। दोपहर में ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर एवं पण्डित आकेशजी उभेगांव के व्याख्यान हुये। प्रात:काल की प्रौढकक्षा ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री द्वारा छहढाला विषय पर ली गई। संपूर्ण कार्यक्रम में लगभग 700-800 साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

कार्यक्रम में श्री आदिनाथ, चन्द्रप्रभ, शांतिनाथ व पार्श्वनाथ विधान श्री अशोकजी उज्जैन, श्री सम्मेद जैन टीकमगढ एवं पण्डित अंकुरजी शास्त्री मैनपुरी द्वारा संपन्न हुये।

वैराग्य समाचार

(1) धर्मानुरागी अत्यंत भद्र-परिणामी गुरुदेवश्री के अनन्य भक्त **श्री माणकचंदजी लुहाड़िया, दिल्ली** का दिनांक 21 नवम्बर को आकस्मिक देहावसान हो गया।

(2) पिपरई (म.प्र.) निवासी श्रीमती मैदाबाई धर्मपत्नी स्व. श्री रतनचंदजी जैन का दिनांक 10 नवम्बर को 90 वर्ष की आयु में पंचपरमेष्ठी का स्मरण करते हुए शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जैन पिपरई की माताजी थीं। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

(3) गुना (म.प्र.) निवासी श्री अशोककुमार जैन की माताजी एवं स्व. श्री हेमचंदजी जैन की धर्मपत्नी **श्रीमती सुशीलादेवी** का दिनांक 10 नवम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक हेतु 501/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

एक मोक्षार्थी की पूर्व भूमिका (6)

कुछ दु:खों में ही सुखाभास के कारण हम उन्हीं के साधन में लगे रहते हैं, तब सुखी कैसे हों?

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री–टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

पिछले अंक में हमने पढा कि दिनरात के हमारे समस्त ही प्रयत्न मात्र सुखी होने के लिये ही होते हैं तथापि हम सुखी नहीं हैं।

क्यों?

सुखी होने के हमारे ये प्रयत्न सफल क्यों नहीं होते हैं?

क्योंकि हम सुख को जानते ही नहीं हैं, पहिचानते ही नहीं हैं। (हम पहले भी इस विषय पर विस्तार से चर्चा कर चुके हैं)

वस्तुत: तो संसार में सुख है ही नहीं, संसार तो एकांतरूप से मात्र दु:ख ही है और हम हैं कि हमें संसार में सुख चाहिये, तो सुख मिले कैसे? हम सुखी हों कैसे?

सर्वप्रथम तो उक्त तथ्य की स्वीकृति ही हमारे समक्ष सबसे बड़ी चुनौती है कि **''संसार एकांत रूप से दु:ख ही है और संसार में किंचित् मात्र सुख है ही नहीं''**

कहने को तो हम सभी अपने आपको धार्मिक और आध्यात्मिक वृत्ति का समझने वाले लोग यही कहते देखे जाते हैं कि संसार में सुख है ही नहीं पर **क्या सचमुच हम ऐसा मानते भी हैं?**

यदि उक्त सवाल पूछा जाये तो सभी एक स्वर में यह कहेंगे भी कि हाँ! हाँ!! संसार में सुख है ही नहीं, पर उनसे पूछिये कि जब आप भूखे पेट में लड्डू खाते हैं तो आनंद आता है कि नहीं या जब प्यास लगी हो तो पानी पीने पर त्रप्ति का अहसास होता है या नहीं, तो वे इन्कार नहीं कर सकेंगे। अब उनसे पूछिये कि यह लड्डू खाने का आनंद और तृप्ति का अहसास क्या है? यह सुख है या दु:ख?

तब वे क्या कहेंगे?

वे इसे सुख ही कहेंगे न?

आखिर यह है भी तो सुख ही न?

प्यास के दु:ख से मुक्ति और तृप्ति का सुख!

तब यह बात सत्य कहाँ रही कि ''संसार में तो दु:ख ही दु:ख है, संसार तो मात्र दु:खों का ही नाम है और संसार में सुख है ही नहीं''।

इस बात से आप भी इन्कार नही कर सकेंगे न?

तब आपकी यह बात सच्ची कहाँ रही कि संसार में सुख है ही नहीं?

अरे ! सिर्फ इतना ही नहीं, जब हम थक जाते हैं तो आराम करने पर थकान के दु:ख से मुक्त होकर नई ऊर्जा और ताजगी का सुख अनुभव करते हैं, जब हमें गर्मी का दु:ख सताता है तब एयरकंडीशनिंग में बैठने पर संतुष्टी का सुख मिलता है। किसी के साथ संघर्ष में विजयी होने पर गौरव का सुख प्राप्त होता है, सिरदर्द हो रहा हो तो पेनकिलर दवा खाकर पीड़ा दूर होने का सुख मिलता है। नृत्य सिनेमा या नाटक देखकर मनोरंजन का सुख, धन–दौलत और भोगसामग्री प्राप्त होने पर वैभवशाली होने का सुख और सत्ता प्राप्त होने पर राजसुख का अनुभव होता है। इतना सुनते ही आप टूट जाते हैं और कहने लगते हैं कि हम अपने घर की बात थोड़े ही करते हैं, शास्त्रों में लिखा है इसीलिये कहते हैं।

हमारी सबसे बड़ी समस्या ही यह है कि **''संसार में दु:ख ही दु:ख है सुख कतई नहीं'' यह बात भी हमने शास्त्रों से जानी है और मोक्ष का सुख भी हमने शास्त्रों में ही देखा है। सचमुच तो हमें न तो दु:खों की खबर है और न ही सच्चे मोक्ष सुख की।**

मैं आपसे पूछता हूँ कि कभी–कभी ही सही पर यदि हमें संसार में सुख दिखाई देता है तो हम शास्त्रों की वह बात सुनकर सहमति में गर्दन क्यों हिलाते हैं कि संसार में सुख है ही नहीं? हमें उससे असहमत होना चाहिये।

तब आप कहते हैं कि **''यदि शास्त्रों में लिखा है तो गलत थोड़े ही लिखा होगा?''**

अरे भोले! **यदि शास्त्रों में लिखा है कि संसार में सुख नहीं है और तुझे कभी–कभी ही सही, संसार में सुख दिखाई देता है तो इस विरोधाभास के बीच तू इस तरह शान्ति से चुपचाप कैसे बैठा रह सकता है? तब तेरी नींद हराम क्यों नहीं होती है?** तब क्यों नहीं तू इस गुत्थी को सुलझाने में जुट जाता है कि शास्त्रों के इस कथन का रहस्य क्या है?

तुझे इस तरह भ्रम की स्थिति में जीना स्वीकार कैसे होता है, तू इस भ्रम के निवारण का प्रयत्न क्यों नहीं करता है? यदि यह कार्य तू स्वयं नहीं करेगा तो तेरे लिये यह कार्य कौन करेगा? यदि तू यह कार्य अभी नहीं करेगा तो कब करेगा?

जब तक तू इस द्विविधा का निवारण नहीं कर लेता है, इसी तरह संसार में भटकता रहेगा, दु:खी ही बना रहेगा, तेरा कल्याण संभव नहीं है। क्या तुझे अपनी यह नियति स्वीकार है। यदि नहीं तो क्यों नहीं जुट जाता है सही निर्णय करने में, अभी, इसी क्षण।

अरे यही तो वह मोड़ है जहाँ से तेरे आगामी जीवन की दिशा निश्चित होगी, तेरे निष्कर्षों पर ही निर्भर करेगा कि अब तक की तरह अब भी संसार में ही सुखी होने का उपाय करते रहना है या संसार छोड़कर मुक्ति का उपाय करना है।

यदि तुझे लगता है कि सच्ची बात तो वही है जो जिनवाणी में लिखी है तो **यह समझने का प्रयास कर कि मेरी समझ में भूल कहाँ है, मुझे कैसे और क्यों संसार में सुख दिखाई देता है? सच्ची समझ विकसित कर और इन मिथ्या सुखाभासों का प्रलोभन छोड़कर सच्चे सुख की प्राप्ति का उपाय कर!**

यदि हमें भरोसा है कि जिनवाणी की बात ही सत्य है तब **निश्चय ही हमें संसार में दिखाई देने वाले सुख, सुख नहीं सुखाभास है अर्थात् दु:ख है, ऐसे दु:ख जो हमारी भूलवश हमें सुख जैसे प्रतीत होते हैं।**

आपको क्या लगता है, क्या हम सभी लोग इतने भोले हैं कि सुख

और दु:ख का फर्क भी नहीं समझते हैं और हमें दु:ख भी सुखरूप दिखाई दे सकते हैं?

ऐसा तो नहीं हो सकता है न?

पर ऐसा होता है। हमारे जीवन में कदम–कदम पर ऐसा होता है।

कैसे?

आइये कुछ उदाहरणों की सहायता से यह बात समझने का प्रयास करते हैं –

मान लीजिये कि हम सर पर बोझा रखकर कहीं जा रहे हों, कुछ ही देर में उक्त बोझे से बोझिल हमारा सर दर्द करने लगता है तब **हम सर का बोझ उतारकर कंधे पर रख लेते हैं और संतुष्ट हो जाते हैं,** कहते हैं अब ठीक है।

मैं पूछता हूँ कि जो बोझा सर पर भार था, क्या वह कंधे पर आकर भारहीन हो गया है? वह तो अभी भी जैसा का तैसा बोझा ही है न! तब वह बोझा जो सर पर रखा हुआ ''दु:ख'' था, ''दु:खरूप'' था, वही कंधे पर आकर ''सुख'' या ''सुखरूप'' कैसे हो गया?

मान लीजिये कि किसी तरह वह सुखरूप हो ही गया तो अब तो वह सदा सुखरूप ही बना रहेगा न? अब तो दु:ख में परिवर्तित नहीं हो जायेगा न?

पर नहीं, कुछ ही समय में अब कंधा दर्द करने लगता है तो हम फिर उस बोझ को कंधे से उठाकर सर पर रख लेते हैं और एक बार फिर संतुष्ट (सुखी) हो जाते हैं।

मैं पूछता हूँ कि जो बोझ एक समय सर पर रखा हुआ दु:खरूप था वह अब सुखरूप कैसे हो सकता है? इसी तरह जब एक समय जब वह कंधे पर रखे जाने पर सुख की अनुभूति करवा रहा था अब दु:खरूप कैसे हो गया?

आखिर वह बोझा है क्या?

वास्तव में वह सुख है या दु:ख?

यदि वह दु:ख है तो सुखरूप कैसे हो सकता है, यदि वह सुख है तो दु:खरूप कैसे हो सकता है? या तो वह बोझा छलिया है या फिर हम ही अज्ञानी (मूर्ख) हैं।

सचमुच हम कितने भोले हैं कि संसार के अनंत दु:खों में से कुछ दु:खों को ही हम सुख मान बैठते हैं और संतुष्ट हो जाते हैं।

कुंए और खाई के बीच हम खाई का चुनाव करके अपने को सुरक्षित महसूस करने लगते हैं, सुखी हो जाते हैं।

यह कोई एकमात्र उदाहरण नहीं है, ऐसे अनेकों उदाहरण हमारे स्वयं के प्रतिदिन के व्यवहार में मिल जायेंगे, यथा –

हमें तेज भूख लगती है तब हम अपने पसंदीदा व्यंजन खाकर सुखी होना चाहते हैं, हो भी जाते हैं, **तो क्या वह व्यंजन सुख है, सुखरूप है?**

यूं तो जब हमें तेज भूख लगी हो तो रूखी–सूखी रोटियाँ भी षट्रस व्यंजन से कम स्वादिष्ट नहीं लगतीं हैं पर यदि ऐसे में हमें पसंदीदा व्यंजन ही मिल जाएं और वह भी भरपूर, तो कहने ही क्या?

मान लीजिये हमें रसगुल्ला बहुत पसंद है। जब हम पहला रसगुल्ला खाते हैं तो हमें बहुत मजा आता है, दूसरा रसगुल्ला खाने में भी आनंद तो आता है पर पहिले जैसा नहीं। तीसरा रसगुल्ला भी हम जैसे तैसे बर्दाश्त तो कर ही लेते हैं, पर अब भी यदि कोई चौथा रसगुल्ला खिलाना चाहे तो? तो यह हमें किसी सजा से कम प्रतीत नहीं होता है। अब यदि कोई हमें पांचवां रसगुल्ला खिलाना चाहे तो? तब तो हम वमन (उल्टी) ही कर देते हैं।

क्यों?

जो रसगुल्ला एक मिनट पहले परमसुख का अवतार था, कुछ ही पलों में परमदु:ख कैसे हो गया?

जाहिर है रसगुल्ला तो रसगुल्ला है, वह न तो सुख है और न ही दु:ख। **यह तो हमारा ही अज्ञान है कि कभी हम उसे सुख का कारण और सुख स्वरूप मानते हैं और कभी दु:ख का कारण और दु:ख स्वरूप।**

इसप्रकार हम पाते हैं कि **संसार में सुख है ही नहीं सुख का छद्म अहसास मात्र हमारी अपनी भ्रमजनित कल्पना की वस्तु है।**

यदि तुझे अब भी संसार में सुख दिखाई देता है तो हमारे पास यह मान लेने के सिवाय और क्या विकल्प है कि अभी दिल्ली दूर है।**(क्रमश:)**

(पृष्ठ 1 का शेष...)

संपन्न हुई।

बालक नेमिकुमार के माता–पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती केसर–जवेरचंद जैन हथाया परिवार मुम्बई को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र–इन्द्राणी श्री प्रेमचंद–सुनीता बजाज कोटा, कुबेर इन्द्र–इन्द्राणी श्री अरुण–सुनीता बज कोटा एवं महायज्ञनायक–नायिका श्री महावीर–मीना कड़ोदिया थे। प्रतिष्ठा मंच का उद्घाटन श्री पदमजी पहाड़िया परिवार इन्दौर एवं प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्री विजयजी बड़जात्या परिवार इन्दौर ने किया। महोत्सव का ध्वजारोहण श्री निहालचंदजी जैन (पीतल फैक्ट्री), जयपुर के करकमलों द्वारा किया गया।

दिनांक 16 नवम्बर को बाल तीर्थंकर का सर्वप्रथम अभिषेक करने का सौभाग्य श्री प्रकाश–वैशाली जैन एवं श्री कमलेश–विपिका जैन हथाया परिवार मुम्बई को मिला। सायंकाल 40 फीट का कांच से बना विशाल पालना दर्शनीय रहा, जिसका उद्घाटन श्री प्रदीपजी चौधरी परिवार किशनगढ ने किया। सर्वप्रथम आहारदान का सौभाग्य श्री ब्रजलालजी जैन हथाया परिवार मुम्बई एवं श्री स्वप्निलजी जैन मंगलायतन को मिला।

मूलनायक सीमंधर भगवान के भेंट एवं विराजमानकर्त्ता श्री सुरेन्द्र–रजनी जैन नीरव ट्रांसफार्मर परिवार कोटा थे। विधिनायक नेमीनाथ भगवान के भेंट एवं विराजमानकर्त्ता श्री अरुण–सुनीता बज परिवार कोटा थे।

संपूर्ण महोत्सव में पूजन, प्रवचन, आध्यात्मिक गोष्ठियों, बाल–कक्षाओं, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत 'इतिहास के दो सूर्य : भरत–बाहुबली' नामक नाटक आयोजित हुआ। संपूर्ण कार्यक्रम में देश–विदेश से पधारे लगभग 7 हजार साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

महोत्सव को सफल बनाने में समिति के समस्त पदाधिकारियों के साथ अनेक नगरों के मुमुक्षु मण्डल व युवा फैडरेशन के सदस्यों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। ●

आगम के आलोक में –

समाधिमरण या सल्लेखना

9

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

जीवों का यह सहज स्वभाव भी है ही कि जो जहाँ जैसे संयोगों में पहुँच जाता है; वहीं रम जाता है। ज्ञानीजनों के तो सम्पूर्ण वस्तुस्थिति हाथ पर रखे आँवले के समान अत्यन्त स्पष्ट है। एक तो संयोगों का स्वरूप स्पष्ट है और दूसरे उनमें कोई रस नहीं है; अतः जगत में जहाँ, जो, जैसा होता है; हुआ करें, उन्हें कुछ भी विकल्प नहीं है।

अतः जैसा यह भव, वैसा ही आगामी भव, क्या अन्तर पड़ता है? जब अन्तर में भव के भाव का अभाव हो गया है तो फिर किस भव में क्या है? इससे क्या फरक पड़ता है?

मृत्यु उनकी दृष्टि में अत्यन्त साधारण सा परिवर्तन है, जिसमें जानने जैसा कुछ भी नहीं है।

जिस व्यक्ति को लड़का और लड़की में कोई अन्तर दिखाई नहीं देता; उसे यह जानने में क्या रस हो सकता है कि मेरी पत्नी के गर्भ भें बच्चा है या बच्ची। जो भी हो सो ठीक है।

इसीप्रकार जिसे अगले भव में कोई च्वाइस नहीं है; उसे यह जानने में क्या रस हो सकता है कि मैं कहाँ जाऊँगा?

जहाँ जाऊँगा, चला जाऊँगा। इसमें या उसमें उसे क्या फरक पड़ता है, एक दो भव आगे-पीछे में भी क्या फरक पड़ता है; क्योंकि अब **ज्ञानियों को अनन्तकाल तक तो संसार में रहना ही नहीं है।**

एक भाई ने मुझसे पूँछा – आप कहाँ जायेंगे? मेरी समझ में कुछ नहीं आया तो उन्होंने स्पष्ट किया कि अगले भव में।

मैंने सहज ही कहा - मुझे एक-दो भव में कोई रुचि नहीं है। जहाँ जाऊँगा, चला जाऊँगा। मुझे इसका कोई विकल्प नहीं है।

सच्ची बात तो यह है कि मुझे किसी भव में रस नहीं है। भव या भव का भाव रस रखने लायक है भी नहीं। इस संसार में कोई भव रहने लायक है क्या? नहीं, तो बात खतम। **यह चर्चा तो भव की चर्चा है, भव के अभाव की नहीं। मुझे भव की चर्चा में कोई रस नहीं।**

किसी भव की चाह को तो निदान कहते हैं। निदान सल्लेखना के पाँच अतिचारों में गिनाया है। मुझे किसी विशेष संयोग में कोई रस नहीं है। एक बात तो यह है कि **मुझे संयोगों में ही रस नहीं है, किसी विशेष संयोग में तो बिल्कुल नहीं।**

मुझे तो मात्र मुझमें ही रस है, असंयोगी तत्त्व में रस है। सो वह असंयोगी तत्त्व तो मैं ही हूँ। **जितना रस संयोगों में रहेगा; उतना रस निज भगवान आत्मा में कम हो जायेगा।**

लोग बार-बार जानना चाहते हैं कि जब तक संसार में रहना है, तब तक आप कहाँ रहना पसन्द करेंगे?

पर, भाई! मुझे संसार में रहना ही नहीं है। जहाँ मुझे रहना ही नहीं है; उसके बारे में आप पूछ रहे हैं कि वहाँ आप कहाँ रहना चाहेंगे?

मजबूरी में महात्मा गाँधी की सूक्ति के अनुसार मजबूरी में जहाँ रहना होगा, वहीं रह लेंगे। उसमें चाह का क्या सवाल है?

मुझे तो मुझ में ही रहना है, मात्र मुझमें ही रहना है। सो मैं मुझमें तो हूँ ही; उसमें क्या रहना?

जहाँ तक संयोगों की बात है। सो क्रमबद्धपर्याय और पूर्वकर्मोदय के अनुसार जब जहाँ रहना होगा, सहज भाव से रह लेंगे, उसमें मीनमेख करने की आदत मेरी नहीं है।

न हमें यह भव बिगाड़ना है और न इसे संभालना है। **जिसमें हमें कोई रस नहीं है; उसे क्या बनाना और क्या बिगाड़ना?**

(क्रमशः)

(पृष्ठ 1 का शेष...)

रूप में आकाश शास्त्री अमायन (शास्त्री तृतीयवर्ष), अनुभव जैन खनियांधाना (शास्त्री द्वितीय वर्ष) ने काव्यांजलि एवं नयन जैन (शास्त्री द्वितीय वर्ष) ने संस्कृत श्लोक के माध्यम से अपनी भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत की। स्मारक परिवार की ओर से ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदिका ने साफा, श्री पी.सी. सेठी एवं श्री ताराचंदजी सौगानी ने शॉल एवं डॉ. भारिल्ल ने रजत श्रीफल भेंटकर पण्डित रतनचंदजी का सम्मान किया। तत्पश्चात् श्री ताराचंदजी सौगानी, श्री महेन्द्रकुमारजी गोधा द्वारा अभिनन्दन किया गया तथा पीयूष टडा (शास्त्री द्वितीय वर्ष) ने एक पेन्सिल स्कैच भेंट किया।

कार्यक्रम का मंगलाचरण दिव्यांश जैन अलवर ने, संयोजन संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा, जिनकुमारजी शास्त्री, रूपेन्द्रजी शास्त्री, विनीतजी शास्त्री ने एवं संचालन पण्डित पीयूषजी शास्त्री ने किया।

खुशखबरी ! **भव्य शुभारम्भ!!**

श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट गिरधरपुरा कोटा परिसर में
प्रेमचंद जैन बजाज चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित

आचार्य समन्तभद्र विद्यानिकेतन

आचार्य समन्तभद्र

भव्य शुभारम्भ

(सोमवार, 2 अप्रैल 2018)

मुमुक्षु आश्रम, कोटा

आप सभी को सूचित करते हुए अत्यंत हर्ष है कि श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट, कोटा विगत 11 वर्षों से तत्त्वज्ञान के प्रचार–प्रसार में संलग्न है और 2008 से शास्त्री अध्ययन हेतु आचार्य धरसेन महाविद्यालय का संचालन कर रहा है, मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट द्वारा ही लौकिक के साथ धार्मिक शिक्षण हेतु **आचार्य समन्तभद्र विद्यानिकेतन** का मंगल आरम्भ दिनांक 2 अप्रैल 2018 से हो रहा है, जिसमें 8वीं कक्षा से प्रवेश दिया जायेगा।

विद्यानिकेतन की मुख्य विशेषताएं

- अंग्रेजी माध्यम द्वारा सी.बी.एस.सी. के उच्च स्तरीय स्कूल में अध्ययन।
- लौकिक शिक्षण के साथ धार्मिक अध्ययन व चारित्रिक निर्माण का सुनहरा अवसर।
- **7वीं कक्षा में 90% से अधिक अंक सहित प्रवेश लेने वाले छात्रों को स्कूल फीस में 50% की छात्रवृत्ति।**
- **80% अंक से 10वीं उत्तीर्ण करने पर एवं शास्त्री महाविद्यालय में प्रवेश लेने वाले छात्रों को 8वीं, 9वीं एवं 10वीं – तीनों वर्षों की पूरी स्कूल फीस वापस।**
- सर्वसुविधायुक्त (लैट–बाथ अटैच) नवीन आवासीय परिसर।
- आवास, भोजन व बस आदि की उच्चस्तरीय सम्पूर्ण नि:शुल्क व्यवस्था।
- प्रतिवर्ष 24 छात्रों को प्रवेश।

नोट :– प्रवेश प्रक्रिया मार्च में संपन्न की जायेगी।

संपर्क सूत्र :– 9785643203, 7891563353, 7737979912, 8104597337

प्रवेश फार्म मंगाने हेतु संपर्क

बजाज पैलेस, पालीवाल कम्पाउण्ड, नगर परिषद कॉलोनी, छावनी, कोटा 324007 (राज.)

'युवा जैन रत्न' सम्मान

जयपुर (राज.) : यहाँ दिगम्बर जैन मंदिर छाबड़ान् किशनपोल बाजार में दिनांक 18 नवम्बर को सामूहिक जिनेन्द्र आराधना संस्था के 109वें कार्यक्रम के अन्तर्गत देश विदेश में ख्यातिप्राप्त विद्वान **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर** को 'युवा जैन रत्न' की उपाधि से सम्मानित किया गया।

समारोह में समाजसेवी राजेन्द्रजी गोदिका, संस्था संरक्षक महेन्द्रकुमारजी पाटनी, राजस्थान जैनसभा के महामंत्री प्रदीप जैन, मंदिर-अध्यक्ष रमेश बड़जात्या, मंत्री प्रद्युम्न पाटनी, एस.जे.ए. अध्यक्ष राकेश गोधा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष योगेश टोडरका, कोषाध्यक्ष संजय काला, सचिव अनिल रांवका आदि ने डॉ. संजीवकुमार गोधा को साफा, शॉल, श्रीफल एवं प्रशस्ति प्रदान कर सम्मानित किया। कार्यक्रम संयोजक प्रदीप हैदरी और राजेश सेठी थे।

कार्यक्रम की शुरुआत सामूहिक णमोकार जाप से हुई। इस अवसर पर प्रसिद्ध गायक अशोक गंगवाल, गौरव जैन कुचामन, धर्मचंद भौंच, श्वेता बाकलीवाल, परिणय जैन, दीया-दिव्या जैन, सृष्टि संघी आदि द्वारा संगीतमय विशेष जिनेन्द्र-भक्ति प्रस्तुत की गई।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

2 से 7 दिसम्बर 2017	शाश्वतधाम-उदयपुर	पंचकल्याणक
22 से 24 दिसम्बर 2017	भीलवाड़ा	स्वाध्याय भवन का उद्घाटन एवं प्रवचनसार मंडल विधान
10 से 12 जन. 2018	मंगला.विश्व.-अलीगढ	सेमिनार
11 से 15 फर.-2018	ललितपुर	पंचकल्याणक
17 व 18 फर.-2018	श्रवणबेलगोला	महामस्तकाभिषेक
23 से 25 फर.-2018	जयपुर	वार्षिकोत्सव
28 फर.से 2 मार्च-2018	कोटा (मुमुक्षु आश्रम)	वार्षिक मेला (होली)
3 से 5 मार्च-2018	इन्दौर	प्रवचनसार विधान

पण्डितप्रवर टोडरमलजी की -

यशोगाथा

(तर्ज - झांसी की रानी)

भृकुटी चढी मिथ्यामति की जब, हुई धर्म की हानि थी।
अध्यात्म जगत की नींव हिली पर, न जग को हैरानी थी।।
रूढिवादी लोगों ने ही, गढी अधर्म कहानी थी।
महावीर के सिद्धांतों की, बहुत हुई बदनामी थी।।
सन्दूकों में बंद पड़ी वो, सच्ची माँ जिनवाणी थी।
सत्य धर्म बतलाने को बस, वही धरम की निशानी थी।।
धन्य भाग्य था लोगों का, प्रारम्भ हुई ये कहानी थी।
टोडरमल की धर्मक्रांति से, मिथ्यात्व को मुंह की खानी थी।।

अद्भुत प्रतिभाशाली वे थे, लिखी शुद्ध जिनवाणी थी।
सन्दूकों के ताले तोड़े, समझी माँ जिनवाणी थी।।
गहन अध्ययन चिन्तन से ही, धर्म ध्वजा फहरानी थी।
पाखण्डों के महल ढहाती, फैली वीर की वाणी थी।।
तर्क-वितर्कों से तुमने, सिली धर्मान्धों की जुबानी थी।
टोडरमल की धर्मक्रान्ति से, मिथ्यात्व को मुंह की खानी थी।।

आचार्यों का लोप हुआ, पर जिनवाणी तो पहुंचानी थी।
'मोक्षमार्ग' का उदय हुआ, कुछ लोगों को हैरानी थी।।
लोगों ने षडयंत्र रचा तो, मौत तो उनकी आनी थी।
अल्पायु और अल्प अवधि में, दी तुमने कुर्बानी थी।।
मरण की कीमत पर लिक्खा, ये उनकी अमर कहानी थी।
टोडरमल की धर्मक्रांति से, मिथ्यात्व को मुंह की खानी थी।।

- शुभांशु जैन, कोटा (शास्त्री तृतीय वर्ष)

प्रकाशन तिथि : 28 नवम्बर 2017

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com